एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

जीरो बजट प्राकृतिक खेती - कृषि क्षेत्र का भविष्य

(*डॉ. भावना वत्सल)
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल, आर..एस.एम. कॉलेज, धामपुर, बिजनौर-246761
* bhawnadmp@gmail.com

आर्थिक विकास के साथ–साथ मानव की आवश्यकताएं अनन्त होती गयी, लेकिन 'रोटी' मनुष्य की सदैव मूलभूत प्रथम आवश्यकता और प्राथमिकता में रही। भारतीय संस्कृति में रोटी की महत्ता 'पहले पूट पूजा फिर काम दूजा' से चरितार्थ होती है। युद्ध के मैदान में भी कहावत है कि 'भूखी सेना युद्ध नहीं कर सकती'। 'आवश्यकता अविष्कार की जननी है' लेकिन अनेक बार इसकी पूर्ति में समाज के लिए आवश्यक उत्पादों की बलि चढ़ा दी जाती है। भारत में आज भी लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या एवं 45 प्रतिशत रोजगार कृषि क्षेत्र में ही है। भारत की कुल जी.डी.पी. में अभी भी 16–17 प्रतिशत हिस्सा कृषि क्षेत्र का है।

भारत प्राचीन काल से ही कृषि प्रधान देश रहा है। प्राचीन काल में लोग पशुपालन तथा पेट भरने लायक खेती कर लेते थे। लेकिन पिछले पांच दशकों में खाद्य–सुरक्षा के लक्ष्य को सफलतापूर्वक हासिल करने के बाद खाद्य–सुरक्षा को बनाये रखने के क्षेत्र में नई चुनौतियां और अवसरों के साथ 21वीं सदी में हम प्रवेश कर चुके हैं। ये प्रमुख चुनौतियां हैं– जलवायु परिवर्तन, जीवन रक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण सुरक्षा, कृषि की उत्पादकता को बनाये रखना, भूमि सुरक्षा और कृषक की आय में वृद्धि आदि।

कृषि पद्धतियां

जैविक खेती प्रणाली – स्वास्थ्य सुरक्षा की दृष्टि से कृषि की एक पद्धति जैविक कृषि प्रणाली पर जोर दिया गया। प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य तथा प्रकृतिक वातावरण के अनुकूल खेती की जाती थी जिसमें जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान–प्रदान का चक्र निरन्तर चलता रहता था। निरन्तर बढ़ती जनसंख्या, पर्यावरण प्रदूषण, भूमि की उर्वरा शक्ति का संरक्षण एवं मानव स्वास्थ्य के लिये जैविक खेती की राह अत्यन्त आवश्यक है।

आधुनिक कृषि अथवा आधुनिक खेती

आधुनिक खेती का अर्थ कृषि की वह उन्नत एवं वैज्ञानिक पद्धति से है जिसमें फसलों का उत्पादन आधुनिक कृषि यन्त्रों, कृषि रसायनों, उन्नतशील बीजों के साथ ही साथ फसलों पर लगने वाले विभिन्न प्रकार के रोगों एवं कीटों को नियन्त्रण आधुनिक तौर तरीकों से करते हुए भरपूर पैदावार प्राप्त किया जा सकता है। पिछले कुछ वर्षो में उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए खाद्य उत्पादन में वृद्धि को हरित क्रान्ति कहा गया है। बढ़ती जनसंख्या की खाद्य पूर्ति तथा कृषि की दशा व दिशा को सुधारने का हरित क्रान्ति एक ताना–बाना था लेकिन अधिक उर्वरकों के प्रयोग तथा कीटनाशकों के अंधाधुन्ध प्रयोग के परिणामस्वरूप जल, वायु तथा मृदा प्रदूषण में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। यहां तक की भूमिगत जल भी प्रदूषित हो गया।

प्राकृतिक खेती

आज कृषि को एक ऐसे नये दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो पोषण सुरक्षा, पर्यावरण सम्बन्धी स्थिरता और भूमि की उत्पादक के उद्देश्यों के बीच संतुलन स्थापित करें। कृषि में ऐसा ही एक नया दृष्टिकोण उभरा है, वह है जीरो बजट प्राकृतिक खेती। प्राकृतिक खेती एक संभावित व्यवहारिक तरीके

के रूप में उभरी है। प्राकृतिक खेती किसानों की आजीविका, लोगों के स्वास्थ्य, पृथ्वी की दशा और सरकारी खजाने के लिए भी उपयोगी है। यह कृषि प्रणाली भविष्य की आवश्यकता है जिसमें पूरी तरह से मिट्टी के सूक्ष्मजीव आधारित जैव–विविधता के संवर्धन एवं फसल प्रणाली से सम्बन्धित प्रबन्धन पर निर्भर करती है। खेती का यह तरीका जैव–विविधता का संरक्षण करता है और पर्यावरण को रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रतिकूल प्रभावों से बचाता है। इससे मृदा जैविक कार्बन से सम्बन्धित अवयवों में सुधार करने के दिशा में उल्लेखनीय परिणाम दिये हैं। प्राकृतिक खेती विश्व का सबसे बड़ा कार्बन पृथक्करण कार्यक्रम बनाने की क्षमता रखता है। दूसरी जीरो बजट अर्थात बिना खर्च किये कृषि कार्य करना क्योंकि भारतीय कृषि जोत छोटी होने से कृषि की लागत बढ़ जाती है। कम जोत वाले किसाने के लिए खेती करना बहुत ही कठिन है क्योंकि उसे लाभ से अधिक हानि होती है। इसी समस्या का समाधान है जीरो बजट प्राकृतिक खेती, इसमें लागत कम होने से लाभ की प्रतिशतता बढ़ जाती है।

किसी भी वृक्ष के समृद्ध होने के लिए आवश्यक है उसकी जड़ों का मजबूत होना। कृषि समाज के साथ भी यही है। हमें अपने प्राचीन ज्ञान से जुड़कर ही आगे बढ़ने की राह देखनी चाहिए। जीरो बजट प्राकृतिक खेती (ZBNF) जड़ों से उसी जुड़ाव का माध्यम है। इसमें पेस्टीसाइड्स और उर्वरकों के प्रयोग के बिना खेती को बढ़ावा दिया जाता है। इसमें किसान पर कृषि पर व्यय का अतिरिक्त लागत का दबाव नहीं पड़ता है। किसानों को ऐसी पद्धतियां सिखायी जाती है जिसमें जमीन की उर्वरा क्षमता बनी रहती है और बिना रासायनिक खाद डाले ही फसल मिलती है। इसमें प्रकृति के साथ साम्य बनाते हुए कृषि को प्रोत्साहित किया जाता है।

जीरो बजट प्राकृतिक खेती करने का तरीका

जीरो बजट प्राकृतिक खेती में देशी गाय के गोबर एवं गोमूत्र का उपयोग करते हैं। इस विध से 30 एकड़ जमीन पर खेती के लिए मात्र 1 देशी गाय के गोबर और गौमूत्र की आवश्यकता होती है। इस खेती में रासायनिक खेती की तुलना में प्राकृति खेती में केवल 40 प्रतिशत ही पानी व्यय होता है। देसी गाय के गोबर व मूत्र से बनाई गयी खाद ''धनजीवामृत'' का प्रयोग किया जाता है। इस खेती में कीटनाशकों के रूप में गोबर की खाद, कम्पोस्ट, जीवाणु खाद, फसल अवशेष और प्रकृति में उपलब्ध खनिज जैसे– रॉक फास्फेट, जिप्सम आदि द्वारा पौधो को पोषक तत्व दिये जाते है। प्राकृतिक खेती में प्रकृति में उपलब्ध जीवाणुओ, मित्र कीट और जैविक कीटनाशक द्वारा फसल को हानिकारक जीवाणुओं से बचाया जाता है। यह खेती चार प्रमुख स्तम्भों पर टिकी है –

1. **बीजामृत** – देसी गाय के गोबर व गोमूत्र के फार्मूलेशन से बीज उपचारित होते हैं। इससे बीज रोगों से भी बचे रहते हैं तथा अनेक पोषक तत्वों की भी पूर्ति होती है।
2. **जीवामृत** – गाय के गोबर व गोमूत्र से तैयार किया जाता है।
3. **आच्छादन** – खेत की फसली अवशेष या अन्य कार्बनिक कचरे से ढक दिया जाता है। समय के साथ ये अवशेष सड़–गल जाते हैं। और खेत की ऊपरी परत को ढ़कने वाली एक तह बन जाती है। इससे जमीन की उर्वर क्षमता भी बढ़ती है और खरपतवार भी कम निकलते हैं।
4. **नमी** – जीव मित्र और आच्छादन से मिट्टी की नमी बढ़ती है। इससे मिट्टी में पानी रोकने की क्षमता बढ़ती है।

प्राकृतिक खेती की आवश्यकता

पिछले कई वर्षो में खेती करने के जो तौर–तरीके प्रयोग में आ रहे हैं उसके कारण मृदा में बहुत नुकसान देखने को मिल रहा है। हानिकारक कीटनाशकों के प्रयोग से लगातार भूमि की उर्वरता व मानव स्वास्थ्य में बहुत गिरावट आयी है। भूमि के प्राकृतिक स्वरूप में भी बदलाव हो रहे हैं। किसानों की पैदावार का आधा हिस्सा उनके उर्वरक और कीटनाशक में ही चला जाता है। रासायनिक खाद और कीटनाशक के उपयोग से ये खाद्य पदार्थ अपनी गुणवत्ता खो देते हैं। इसी कारण से वर्तमान व भविष्य की आवश्यकताओं और प्रकृति के संरक्षण तथा उत्तम स्वास्थ्य के लिए प्राकृतिक खेती की महती आवश्यकता है। इससे मिट्टी में पोषक तत्वों का संतुलन बना रहता है तथा किसान को भी खेती में अधिक पैसा व्यय नहीं करना पड़ता है।

वर्तमान में महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, हरियाणा, गुजरात आदि राज्यों प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने वाली अग्रणी राज्य हैं। महाराष्ट्र के प्रगतिशील किसान श्री सुभाष पालेकर द्वारा शुरू किया गया यह

कार्य आज देश के विभिन्न राज्यों में क्षेत्रों में प्रचार–प्रसार के माध्यम से लगातार प्रसारित हो रहा है। अभी हाल ही में इस विषय पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने लाइव प्रसारण के द्वारा देश , प्रदेश तथा जिला बिजनौर के कई किसानों ने प्राकृतिक खेती के लाभ व इसको करने के तरीकों को जाना–समझा।

निष्कर्ष

किसानों की शुद्ध आय बढ़ाने तथा पर्यावरण की रक्षा करने के अतिरिक्त प्राकृतिक कृषि पद्धतियां रासायनिक पदार्थो से युक्त कृषि उत्पादों की बेहतर पैदावार के माध्यम से पोषण सुरक्षा सुनिश्ति करेगी। प्राकृतिक खेती के द्वारा कृषि के सतत् विकास के लक्ष्यों को पूरा किया जा सकेगा, साथ ही प्रकृति का संरक्षण भी हो सकेगा।

सन्दर्भ सूची

1. मासिक पत्रिका दिव्य
2. योजना मासिक पत्रिका
3. कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका
4. ऑनलाइन वर्चुअल संवाद (जिला बिजनौर व कृषि वैज्ञानिक विशेषज्ञों के बीच)
5- http://www.spnfhp.nic.in/
6- www.google.com

AGRI ARTICLES
Publishing Skills...
E-Magazine for Agricultural Articles
(www.agriarticles.com)